फरीदाबाद
मजदूर समाचार
अनुभवों तथा विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.in>

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद - 121001

नई सीरीज नम्बर 328 1/– अक्टूबर 2015

नदी को वापस हिमखण्ड में नहीं धकेला जा सकता

आम बातचीत में काम, काम के इर्द-गिर्द जीवन शैली, न्याय से विरासत में मिली भाषा, आत्म-परिचय, मानवीय मूल्य, और विचार छिन्न-भिन्न हैं। यह टूटन पिछले तीस वर्ष के दौरान बहुत-ही तीव्र गति से हुई। अन्य धाराओं का उभरना और नजर आना बहुत तेज रफ्तार लिये है। कुछ मुखर अभिव्यक्तियों को यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

सामुहिक क्षमता, सामुहिक विलास

''इसी महीने आप देखिये, मानेसर में एक सिलाई कारीगर के खिलाफ एक्शन के विरोध में 250 टेलरों ने मशीनें बन्द कर दी। दो महीने पहले देखिये, एक फैक्ट्री में दो को निकाले जाने के विरोध में दो हजार ने काम बन्द कर दिया। छह महीने पहले देखिये, एक के पक्ष में दो दर्जन फैक्ट्रियों के मजदूर सत्ता से भिड़े। और दो वर्ष पहले की बात देख लीजिये, हजारों ने पूरा औद्योगिक क्षेत्र बन्द कर दिया।''

धागे का दूसरा सिरा हजारों सिरे लिये है

''आपको तो यह याद ही होगा, मजदूर समाचार में भी छपा था, एक फैक्ट्री में एक्सीडेन्ट में एक युवा के घायल होने की खबर दूसरी फैक्ट्रियों में तत्काल पहुँच गई थी। अन्य फैक्ट्रियों के कई लोग अस्पताल पहुँचे और डॉक्टर से साफ-साफ कहा कि अगर मैनेजमेन्ट खर्च नहीं देगी तो पैसे हम देंगे, उपचार जारी रखो। यह है माहौल हमारे यहाँ का।''

हजारों में अदृश्य संधियाँ

''ग्यारह-बारह महीने पहले की बात है, पतलून की एक टाँग बड़ी और एक टाँग छोटी होने के कारण तेरह हजार पतलूनें फैक्ट्री लौट आई। और अभी जुलाई की बात है, एक अन्य फैक्ट्री की हजारों की सँख्या में एक टाँग बड़ी और एक टाँग छोटी वाली गर्म पतलूनें कन्टेनरों में, ट्रकों पर, जहाजों पर यात्रा कर रही हैं। इससे एक बात और याद आई, कुछ ही महीने पहले कम्बोडिया में हजारों में, कई फैक्ट्रियों में, सामुहिक बेहोशी का दौर चला।''

मुखर है गूँगी बैठक

''अच्छा, आपको एक बारम्बार होती, अक्सर होती बात बताता हूँ। हमारा एक दोस्त है जो कैंटीन में सैंकड़ों साथियों के साथ लम्बी टी-ब्रेक की परम्परा बना रहा है। बैठे-बैठे आपस में खूब बातें करते हैं और मैनेजरों के आने पर चुप हो जाते हैं। उस मित्र का दावा है कि यह विचार उन्हें बंगलादेश की महिलाओं से मिला है। उसका कहना है कि बंगलादेश में यह नोरमल है कि अचानक और एक साथ हजारों महिला मजदूर फैक्ट्रियों में नहीं पहुँचती। उसका मानना है कि उन महिलाओं की क्षमता है — हजारों में आपस में बातचीत करना, बिना मैनेजमेन्ट को भनक लगे। मैनेजमेन्टें बौखला जाती हैं। दोस्त का कहना है कि वह और उसके साथी इस में निपुणता के लिये सतत रियाज कर रहे हैं। इस में जीवन के संगीत का अहसास है।''

अनेक हैं विघ्न के वाहक, अनेक हैं विघ्नेश्वर

''आजकल काम आपस में इतने गुँथे हुये हैं कि कोई भी असहाय नहीं है, कोई भी अपने को कमजोर नहीं मानते। इधर ही जो एक लड़का आया था वह कह तो रहा था कि हम 17 सफाई कर्मी दो दिन फैक्ट्री के अन्दर नहीं गये और ऐसी अफरा-तफरी फैली कि क्या बतायें। और याद हैं वो तीन लड़के जिनके द्वारा कम्प्रेसर बन्द करने से सब लाइनें बन्द हो गई थी और 6000 मजदूरों को विश्राम मिला।''

संहार नहीं, यह सृष्टि है

''ताऊ, यह नई पीढी की तोड़-फोड़ नहीं है। यह तो प्रयोग हैं। पिछले महीने ही, दिल्ली में कला कॉलेज के छात्र क्लास रूम छोड़ कर कॉलेज के बाहर फुटपाथ पर दरी बिछा कर बैठे। अनेकों प्रकार की बातचीतें हुई, तरह-तरह के लोग आये। ताऊ, क्लास रूम की जो कल्पना है उस में तो यह नामुमकिन है। और यह जो आप ने मानेसर में देखा है, हजारों में स्त्री और पुरुष फैक्ट्रियों के बाहर हफ्तों बैठ जाते हैं। वह स्थल हैं नई सोच, नये रिश्ते, नये मंच, नई भाषा, नये जोड़ों की तलाश और रचना के।''

असंगत बन गये है

कानूनों का उल्लंघन सामान्य बन गया है। कानूनों का पालन अपवाद बन गया है। कानूनों का कार्य नहीं कर पाना, कानूनों का नाकारा हो जाना, कानूनों का असंगत बन जाना एक लक्षण है। यह इस बात का लक्षण है कि जिन सामाजिक सम्बन्धों के आधार पर कानून खड़े हैं वे सामाजिक सम्बन्ध कार्य नहीं कर पा रहे, वे सामाजिक सम्बन्ध नाकारा हो गये हैं, वे सामाजिक सम्बन्ध असंगत हो गये हैं। सामाजिक सम्बन्ध और उसके कानूनों का असंगत होना नये सामाजिक सम्बन्ध की आवश्यकता की अभिव्यक्ति भी है, नये सामाजिक गठन की पूर्ववेला भी है। ऊँच-नीच, मण्डी-मुद्रा, खरीद-बिक्री, हानि-लाभ, रुपये-पैसे, मजदूरी-प्रथा वाले सामाजिक सम्बन्ध की जगह क्या ? विश्व के सात अरब लोगों में इस पर मन्थन हो रहा है। हमें लगता है कि फैक्ट्री मजदूरों की इस सामाजिक मंथन में उल्लेखनीय भूमिका है। इस सन्दर्भ में आदान-प्रदान बढाने में मजदूर समाचार योगदान देने के लिये फैक्ट्री मजदूरों की बातों को प्रकाशित करता है।

एस के एच मैट्ल्स मजदूर : '' आई एम टी मानेसर में मारुति सुजुकी परिसर में गेट नं. 4 के अन्दर सात ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे एक हजार मजदूर काम करते हैं। फैक्ट्री यहाँ 2006 से है और इस में स्थाई मजदूर एक भी नहीं है। प्रैस शॉप, वैल्ड शॉप, पेन्ट शॉप में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में मारुति सुजुकी कारों के एक्सल, सस्पैन्शन जैसे बड़े पार्ट बनते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। वैल्ड शॉप के दो विभागों में 80-90 रोबोट हैं। मशीनें बाईपास रहती थी, सैन्सर काम नहीं कर रहे होते थे, एक्सीडेन्ट होते रहते थे। रोबोट द्वारा मजदूर की हत्या के बाद मेन्टेनैन्स में सुधार हुआ है परन्तु कम्पनी ने मैनपावर कम कर दी है — जहाँ 9 थे वहाँ 6 कर दिये हैं, कुछ वरकरों से दो-दो स्टेशन चलवाते हैं। काम अधिक और 12 घण्टे खड़े-खड़े काम करने से वैल्डिंग में आँखों पर बहुत जोर पड़ता है। निकलना, निकालना, और भर्ती चलते रहते हैं। मारुति सुजुकी में छुट्टी होती है तब एस के एच में भी छुट्टी होती है और माल का स्टॉक होने पर कम्पनी अलग से भी छुट्टी करती है। वर्ष में इस प्रकार की 50-60 छुट्टियाँ हो जाती हैं और इन दिनों के पैसे मजदूरों को कम्पनी नहीं देती। यहाँ रोज 15 मिनट पहले बुलाते हैं पर इस अतिरिक्त समय के बदले में छुट्टी नहीं देते। इधर दो-तीन वर्ष से बोनस देना शुरू किया है पर मात्र 10 रुपये प्रति ड्युटी के हिसाब से पैसे देते हैं।''

ग्राफिटी एक्सपोर्ट श्रमिक : '' 377 उद्योग विहार फेज-2, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में इस समय मैक्स और मिन्नी मैगी के वस्त्र तैयार किये जा रहे हैं। अगस्त में लेडीज ड्रैस पन्नी पैक के बाद कारटन पैक भी हो गये थे और शिपमेन्ट के लिये तैयार थे जब बाइंग हाउस से क्वालिटी वाले आये। कुछ कारटन खोले — किसी में प्रैसिंग खराब, किसी में सिलाई खराब। सब कारटन खोल दिये, फिर से चैकिंग होगी, धागे कटेंगे, प्रैसिंग होगी, पैक होंगे। इधर 3 अक्टूबर को नये मैनेजर ने भोजन अवकाश से 10 मिनट पहले काम बन्द करवाया और मजदूरों को समझाने लगा : अगर कम्पलायन्स आती है तो उसे बोलना कि तनखा 7 को, ओवर टाइम बिलकुल नहीं लगता, रविवार को फैक्ट्री बन्द रहती है, सवेतन और कैजुअल छुट्टियाँ मिलती हैं, बोनस देते हैं, ई एस आई तथा पी एफ लागू हैं और सब को कार्ड मिला है, नियुक्ति-पत्र मिलता है...... दिखाने को कहें तो कहना कमरे पर हैं...... कितने दिन से हो पूछें तो कहना कि अभी नये लगे हैं, यह मत कहना कि 5 महीने या 2 साल से हैं, कहना कि ठेकेदार नहीं हैं, सब कम्पनी की तरफ से हैं। साहब की बातों में मजदूर कोई रुचि नहीं ले रहे थे और आपस में बातें कर रहे थे : अनाड़ी हैं क्या जो हमें सिखा रहा है, झूठ बोलने को कह रहा है।''

डीटेल्स एक्सपोर्ट कामगार : ''डी-30 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में कार्य करते 400 मजदूरों में से 43 टेलरों को कम्पनी ने 2011 में नौकरी से निकाला। मजदूर श्रम विभाग गये। कम्पनी हाई कोर्ट गयी। जज के कहने पर 33 महीने बाद, नवम्बर 2014 में 21 सिलाई कारीगर ड्युटी पर लिये। इस दौरान 22 नौकरी छोड़ गये थे। इधर 16 सितम्बर को कम्पनी ने कोर्ट के जरिये आये 21 टेलरों को फिर नौकरी से निकाल दिया है।''

पी एस इन्टरप्राइजेज वरकर : '' 6 ई/2 नोरदर्न कॉम्पलैक्स, 20/3 मथुरा रोड़, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 11½-11½ घण्टे की दो शिफ्टों में पावर प्रैसों पर ऑटो पार्ट्स का कार्य होता है। मशीनों को आराम देने के लिये कम्पनी उन्हें आधा-आधा घण्टा बन्द करती है। कल्पना फोर्जिंग फैक्ट्री से मैटल शीट आती हैं और मारुति सुजुकी, टाटा, महिन्द्रा कारों की डाइयों के अनुसार कार्य के बाद वापस कल्पना फोर्जिंग भेज देते हैं। पावर प्रैसों पर हाथ बहुत कटते हैं। एक हफ्ते में पाँच के हाथ कटे — शिशुपाल की 3 उँगली कटी, चाँद का अँगूठा कटा, राकेश की उँगली कटी, सन्नी का अँगूठा कटा, शेर सिंह की उँगली तथा अँगूठा कटे। डायरेक्टर कहता है कि यह तो होता ही रहता है, पावर प्रैस लाइन में हाथ तो कटते ही हैं। एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरते, ई एस आई अस्पताल नहीं ले जाते, ज्यादातर को सूर्या ऑर्थो एण्ड ट्रॉमा सैन्टर ले जाते हैं।''

सुरक्षाकर्मी : '' आई एम टी मानेसर स्थित एडिगियर फैक्ट्री पर डी एस एस सेक्युरिटी के हम 20 गार्ड ड्युटी करते थे। फैक्ट्री बन्द हो गई और 7 मार्च को डी एस एस सेक्युरिटी का ठेका समाप्त कर दिया गया। फरवरी की तनखा 23 मार्च तक नहीं दिये जाने पर हम तीन गार्डों ने श्रम विभाग में शिकायत की। श्रम विभाग में अप्रैल से जुलाई के दौरान हर 10-15 दिन पर हमें तारीख देते रहे। फिर श्रम अधिकारी बोला कि वकील कर लो। वकील ने तीनों से 500-500 रुपये लिये और 10 प्रतिशत राशि मिलने पर लेने का तय किया। अब फिर तारीखें पड़ते 2 महीने हो गये हैं और वकील कहता है कि समय लगेगा।''

सन्धार कम्पोनेन्ट्स मजदूर : '' प्लॉट 24-25 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 20 स्थाई मजदूर, स्टाफ के 135 लोग, और ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 400 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में होण्डा तथा हीरो दुपहियों के पुर्जे बनाते हैं। मोल्डिंग विभाग में इंजीनियर हर समय सिर पर खड़ा रहता है, चाय भी मशीन चलाते हुये पिओ।''

मिलेनियम इम्ब्राइड्री श्रमिक : '' बी-75 ओखला फेज-2, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में 70 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ई एस आई तथा पी एफ किसी मजदूर की नहीं हैं, मास्टर की भी नहीं। दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन किसी मजदूर को नहीं देते — हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 7500 रुपये और ऑपरेटरों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 9000-10,500 रुपये।''

कैलाश रिबन कामगार : '' 403 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में फरवरी 2013 में हम ने तीन दिन काम बन्द रखा, फैक्ट्री के अन्दर नहीं गये, गेट के बाहर बैठे, दोनों शिफ्ट के बाहर बैठे, चौबीसों घण्टे बैठे तब कम्पनी ने हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन लागू किया था। कम्पनी इधर फिर न्यूनतम वेतन नहीं दे रही। फैक्ट्री में 400 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में लेबल, रिबन, टैग, बटन बनाते हैं। यहाँ धागों की रंगाई भी होती है और प्रिन्टिंग प्रैस भी है। कागजों में कम्पनी कानूनी खानापूर्ति करती है।''

इन्टरव्यू फैशन वरकर : '' ए-294 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में काम करते 180 मजदूरों को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन नहीं देते। ई एस आई व पी एफ 60 वरकरों के हैं। महीने में 200-250-300 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन के लिये मजदूरों ने दो दिन काम बन्द किया था पर असर नहीं पड़ा। हैल्परों की तनखा 6000-6500 रुपये और सिलाई कारीगरों की 7500-8700 रुपये।''

(शेष पृष्ठ तीन पर)

नदी को वापस हिमखण्ड में नहीं धकेला जा सकता

आदतों में शुमार है कब्जे हटाना

''भई, कब्जे तो ढीले पड़ रहे हैं। आनन्द आ रहा है। किसी से भी पूछिये कि आपका सब से मजेदार, आनन्ददायक समय हाल ही में कौनसा रहा है तो वह यही बतायेंगे कि वे कुछ घण्टे, वह एक दिन, वे दस दिन, वे बीस दिन जब मैनेजमेन्ट का कब्जा हटा कर हम दिन-रात फैक्ट्री में रहे। यह आम बात होती जा रही है, आदत-सी बनती जा रही है। यह और फैल जाये तो बहुत-ही बढिया माहौल बन जायेगा।''

अन्दर न जाना बाहर न जाने जैसा ही है

'' सऊदी अरब में काम करके जो आये थे उन्होंने एक अनोखे माहौल का वर्णन किया। बसें इन्तजार करती रहती और वह भाई साहब अपने पाँच-छह हजार साथियों के साथ निवास स्थल से बाहर ही नहीं निकलते। दस-दस दिन नहीं निकलते और साल में आठ-दस बार ऐसा कर लेते हैं। सुन कर हँसी में थे कि एक साथी ने याद दिलाया। बोली यह तो हम भी कई बार कर चुके हैं। कम्पनी बसों में आये, गेट पर उतरे, और फैक्ट्री के अन्दर नहीं गये। सुपरवाइजर और मैनेजर भटकते रहे। हजारों में वे किस से पूछते कि आप लोग क्या चाहते हैं।''

सत्ता के सामने नाचते हुये जाते हैं तब सत्ता की बोलती बन्द हो जाती है

'' एक बात पिछले पाँच वर्ष में शानदार ढँग से उभर कर आई है। एक आम समझ थी कि प्रजा रोते हुये फरियाद ले कर सत्ता के पास जाये तो सत्ता देख और सुन पाती है। इधर जब भी प्रजा नाचते हुये सत्ता के सम्मुख जाती है तब प्रजा प्रजा नहीं रहती और सत्ता सत्ता की भूमिका में नहीं रहती। प्रजा और सत्ता के सम्बन्ध को बनाये रखने का तामझाम शंका में, संकट में आ जाता है। पिछले अक्टूबर में कोलकाता में छात्रों के गीत, संगीत, नृत्य, और मौन ने सत्ता के अस्तित्व को ढीला कर दिया।''

''आप ठीक कह रहे हो शायद। हमारी फैक्ट्री में एक फायर अलार्म है। विशेषज्ञ ट्रेनिंग देते हैं कि कब, कैसे, और क्यों उसका इस्तेमाल हो। सभी ने अच्छी तरह समझ लिया। अब अगर तनखा में देरी होती है या लाइन बन्द करनी है तो हम में से कोई फायर अलार्म बजा देते हैं। कब, कैसे, क्यों यह तो खुले सवाल हैं।''

'' हमारे यहाँ तो बड़ा सिम्पल है। ब्रेक में पार्क में जा कर बैठो। हँसी-मजाक, बातचीत, गहरी चर्चायें जारी रखो। चर्चाओं को चलने दो, हूटर को बजने दो, सुपरवाइजरों को आने दो, चर्चाओं को चलने दो, मैनेजरों को आने दो, हूटर को बजने दो। और फिर अचानक उठ कर वापस चले जाओ। हर ब्रेक में, हर दिन इस प्रकार के डाँस में रहते हैं।''

रोल करना नृत्य की मस्ती लिये है

'' डाँस हर वक्त, हर समय, हर रोज हजारों के बीच चलता रहता है। हाल ही में इसकी एक अभिव्यक्ति सब ने देखी थी। एक फैक्ट्री से साथी निकले, अपने को रोल किये, क्या फोर्स पकड़े ! दूसरी फैक्ट्री, तीसरी फैक्ट्री, चौथी फैक्ट्री, पाँचवीं फैक्ट्री, ग्यारहवीं फैक्ट्री उनके साथ रोल करने लगी। पूरा औद्योगिक क्षेत्र नृत्य की मुद्रा में आ गया। अभी आपको सुनाते हुये ऐसा लग रहा है जैसे शरीर में वह रोल आरम्भ हो गया है।''■

निमंत्रण

अक्टूबर में 25 तारीख वाले रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

Ph. 0129-6567014

E-mail < majdoorsamachartalmel@gmail.com >

E-mail < baatein1@yahoo.co.uk >

इण्डो ऑटोटेक मजदूर : '' प्लॉट 132-133 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 800 वरकर 11½-11½ घण्टे की दो शिफ्टों में होण्डा दुपहियों के पुर्जे बनाते हैं। स्थाई मजदूर 50 थे, अब 10 हैं, यूनियन के फेर में निकाले गये।'' ***थीम एक्सपोर्ट श्रमिक :*** '' एफ-25/1 ओखला फेज-2, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में कढाई करती, मोती-सितारे लगाती 50 महिला मजदूरों की तनखा 5000 रुपये है जबकि दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन अकुशल श्रमिक के लिये भी 9048 रुपये है।''

कुछ पते

1. केन्द्रीय भविष्य निधि आयुक्त
   14 भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली — 110066
2. महानिदेशक, कर्मचारी राज्य बीमा निगम,
   सी आई जी मार्ग, नई दिल्ली — 110002
3. श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार 30 वेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ
4. श्रम आयुक्त दिल्ली सरकार , 5 शामनाथ मार्ग,
   दिल्ली—110054 < labjlc2.delhi@nic.in >

- *अपने अनुभव व विचार मजदूर समाचार में छपवा कर चर्चाओं को और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।*
- *बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दें ।*
- *महीने में एक बार छापते हैं, 13,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। चर्चाओं के लिए समय निकालें।*

रै के से

मारुति सुजुकी मानेसर मजदूरों से बातचीत

24 सितम्बर को यूनियनों और कम्पनी के बीच तीन वर्ष का दीर्घकालीन समझौता सम्पन्न। सब कुछ शान्तिपूर्ण होने पर मैनेजिंग डायरेक्टर ने प्रसन्नता जाहिर करते हुये तीन हजार रुपये प्रत्येक स्थाई मजदूर को उपहार में दिये। शुक्रवार के अखबारों में समझौते की वाहवाही वाले समाचार। और, शनिवार को सुबह 6½ बजे की शिफ्ट में कम्पनी की मानेसर फैक्ट्री में 400 टेम्परेरी वर्कमैन काम करने फैक्ट्री के अन्दर नहीं गये। बी-शिफ्ट के आसपास के टेम्परेरी वर्कमैन भी फैक्ट्री गेट पर पहुँच गये। करीब 600 टेम्परेरी वर्कमैन एकत्र और कोलाहल। मारुति सुजुकी कम्पनी ने कॉरपोरेट सोशल रेस्पोन्सिबिलिटी के तौर पर आसपास के 14 गाँव गोद ले रखे हैं। वाहनों से कुछ गाँवों वाले फैक्ट्री गेट पहुँचे और आते ही टेम्परेरी वर्कमैनों पर आक्रमण कर दिया। तब पुलिस भी लाठियों से टेम्परेरी वर्कमैन को खदेड़ने लगी। एक सौ को पकड़ कर पुलिस थाने भी ले गई। दँगा के आरोप में 500 अज्ञात लोगों और जुलाई 2012 में डिस्चार्ज किये गये दो स्थाई मजदूरों पर पुलिस ने नामजद एफ आई आर दर्ज की। स्थिति तनावपूर्ण पर शान्त बताई गई और एक हजार से ज्यादा पुलिस कमाण्डो फैक्ट्री के अन्दर व बाहर तैनात किये गये। पुलिस अधिकारी ने लाठीचार्ज से इनकार करते हुये मजदूरों और गाँववालों में झड़पों के कारण दँगा हुआ वाला बयान दिया। कम्पनी ने बयान दिया कि 26 सितम्बर को ए-शिफ्ट में सामान्य उत्पादन हुआ। मारुति सुजुकी की मानेसर फैक्ट्री में कार्यरत मजदूरों के अनुसार 26 सितम्बर को ए-शिफ्ट में ए-प्लान्ट में 90 टेम्परेरी वर्कमैन ड्युटी पर नहीं आये थे और सब लाइनें रुक-रुक कर चल रही थी। ए-प्लान्ट में ए-शिफ्ट में 480 की जगह 291 कारें बनी, बी-प्लान्ट में 480 की जगह 230 गाड़ी असेम्बल हुई थी, और सी-प्लान्ट में 480 की जगह 260 वाहन तैयार हुये थे।

✶ 30 सितम्बर को कार प्लान्ट में ए-शिफ्ट में असेम्बली में शॉकर लगाते समय एक्सीडेन्ट हुआ। एक टेम्परेरी वर्कमैन की आँख में चोट लगी। मारुति सुजुकी मैनेजमेन्ट घायल मजदूर को आई एम टी मानेसर में ई एस आई अस्पताल नहीं ले गई बल्कि गुड़गाँव में एक अस्पताल ले गई। कम्पनी ने एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरी। मैनेजमेन्ट अधिकारी बोले कि एक्सीडेन्ट मत बताना, कहना आँख में कुछ गिर गया।

✶ कार और इन्जन प्लान्ट में ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को अप्रैल-अगस्त 2015 के पाँच महीने का एरियर 9500-10,000 रुपये मिल गया है। ग्लास असेम्बली वरकरों को यह पैसे मिले। लेकिन सीट लाइनों पर के एम एल मजदूरों को एरियर के यह पैसे नहीं दिये हैं।

पिछले तीन वर्षीय समझौते में स्थाई मजदूरों की तनखा में 18,000 रुपये की वृद्धि थी। इस बार के तीन वर्षीय समझौते में स्थाई मजदूरों के वेतन में 16,800 रुपये की बढोतरी है।■

हरियाणा सरकार द्वारा 1 जुलाई 2015 से निर्धारित न्यूनतम वेतन :

डी ए के मात्र 74 रुपये आये हैं। एरियर के 222 रुपये बने हैं।

अकुशल श्रमिक	5887 रुपये मासिक
अर्ध-कुशल ***ब***	6147 रुपये मासिक
कुशल श्रमिक ***ब***	6407 रुपये मासिक
उच्च कुशल श्रमिक	6537 रुपये मासिक

हरियाणा सरकार ने घोषणा की है कि राज्य में 1 नवम्बर 2015 से मासिक न्यूनतम वेतन अकुशल के 7600 रुपये, अर्ध-कुशल अ के 7980 रुपये, अर्ध-कुशल ब के 8379 रुपये, कुशल अ के 8798 रुपये, कुशल ब के 9238 रुपये, और उच्च कुशल श्रमिक के 9700 रुपये।

ओरियन्ट क्राफ्ट

प्लॉट 15 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 1000-1200 मजदूर काम करते हैं। रविवार, 6 सितम्बर को ओवर टाइम था। भोजन अवकाश से पहले एक सिलाई कारीगर का लाइन इन्चार्ज से लफड़ा हुआ। वह वरकर को फ्लोर इन्चार्ज के पास ले गया। फ्लोर इन्चार्ज टेलर को पकड़ कर हिलाने लगा तो टेलर ने थप्पड़ जड़ दिया। वरकर को मैनेजर के पास ले गये। मैनेजर कभी पुलिस बुलाने की तो कभी एच आर विभाग ले जाने की कहने लगा। एच आर ले जाने लगे तो टेलर भाग कर प्रोडक्शन फ्लोर पर पहुँच गया। हँगामा हो गया। छुट्टी के कारण 250 सिलाई कारीगर ही थे। सब ने काम बन्द कर दिया। सब बोले कि इसे बाहर करोगे तो हम सब भी बाहर जायेंगे। जनरल मैनेजर ने बुलाया और माफी माँगी तब काम आरम्भ हुआ।

ब्रिजस्टोन

प्लॉट 11 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में सफाई कर्मियों द्वारा स्वयं उठाये कदम का तत्काल प्रभाव पड़ा था। मार्च की तनखा 20 अप्रैल तक नहीं दी तो 21 अप्रैल को 17 सफाई कर्मी फैक्ट्री के बाहर बैठे। दफ्तर और शॉप फ्लोर पर अफरा-तफरी मची। सफाई कर्मियों ने 22 अप्रैल को भी फैक्ट्री में प्रवेश नहीं किया। हड़बड़ाई ठेकेदार कम्पनी ने 23 अप्रैल को एक-एक हजार रुपये दिये और बाकी पैसे शीघ्र दे देगी कह कर इन वरकरों को फैक्ट्री में ले गई। ब्रिजस्टोन कम्पनी पर सफाई कर्मियों के कदम का इतना असर पड़ा था कि एवन फैसिलिटी का ठेका समाप्त कर दिया।

यहाँ 2005 में आरम्भ हुई फैक्ट्री में बहुत-ही कम स्थाई मजदूर थे। दबाव में आ कर कम्पनी ने जनवरी 2013 में 200 वरकर परमानेन्ट किये। और फिर जनवरी 2014 से दो-दो, चार-चार कर निकालने लगी। मार्च 2015 तक कम्पनी ने 52 स्थाई मजदूर नौकरी से निकाल दिये थे। कम्पनी के नियमों अनुसार काम करो, यानी, सिस्टम बाईपास नहीं करो तो काम नहीं करने का आरोप। छुट्टी बकाया फिर भी विवाह के लिये छुट्टी नहीं देना — अगले साल शादी करना।

30 स्थाई मजदूर अप्रैल में गुपचुप एक यूनियन से जुड़े। श्रम विभाग से फैक्ट्री यूनियन की रजिस्ट्रेशन के कागज आये तो कम्पनी ने जुलाई में स्थाई मजदूर चेन्नै ट्रान्सफर करने शुरू किये। मध्य-सितम्बर तक 23 का ट्रान्सफर और यूनियन की सलाह पर इन्होंने ट्रान्सफर लैटर लेने से इनकार किया। इस प्रकार 15 सितम्बर तक 23 स्थाई मजदूर फैक्ट्री के बाहर हो गये तब यूनियन ने 17 सितम्बर को 24 घण्टे टूल डाउन की सूचना श्रम विभाग, मैनेजमेन्ट, थाने आदि को दी। सुबह 6 बजे 17 सितम्बर को काम बन्द, पुलिस फैक्ट्री में। पुलिस के आदेश और यूनियन के निर्देश पर 7 बजे मजदूर फैक्ट्री से बाहर निकले। बी और सी शिफ्ट के वरकर भी बाहर बैठे। अगले दिन ड्युटी के लिये गये तो कम्पनी ने ड्युटी पर नहीं लिये। इस प्रकार 17-18 सितम्बर से पौने दो सौ स्थाई मजदूर और दो सौ से ज्यादा ठेकेदारों के जरिये रखे पुराने मजदूर फैक्ट्री के बाहर बैठे हैं। कम्पनी इसे गैर-कानूनी हड़ताल कह रही है। थोड़े-से स्थाई मजदूर, कुछ ट्रेनी, और ठेकेदारों के जरिये भर्ती नये मजदूरों के जरिये फैक्ट्री में 18 सितम्बर से उत्पादन कार्य हो रहा है। यूनियन ने श्रम विभाग में शिकायत की है। तारीखें पड़ रही हैं — 21 सितम्बर, 24, 30 सितम्बर, 6 अक्टूबर, 16 अक्टूबर.......

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया। सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/15-17